किसलिए है जिन्दगी, मुस्कराते रहो

रामनाथ सिंह
रुड़की

किसलिए है जिन्दगी

मुस्कुराने के लिए है जिन्दगी
हंसने और खिल–खिलाने के लिए है जिन्दगी
बीमार होना भी तो दुख की बात है
पर दुखी होना भी तो बड़ा पाप है
यू आंसू बहाने के लिए नहीं है जिन्दगी
मुस्कराने के लिए है जिन्दगी .....

कोयल की कूक से भी तुम कुछ सीख लो
वाणी में मधुरता से जीना सीख लो
कार्य को कल पर टालने के लिए नहीं है जिन्दगी
मुस्कराने के लिए है जिन्दगी .....

बारिश के मन में छिपी है हसरतें
चाहते हैं जीव भी कुछ हम कर सकें
अधूरी नहीं पूरी करने के लिए है जिन्दगी
मुस्कराने के लिए है जिन्दगी .....

ज्ञान से उदासी को अब दूर कर
जला दे मोहब्बतों के चिराग अंधेरे दूर कर
ज्ञान बढ़ाने के लिए है जिन्दगी
मुस्कराने के लिए है जिन्दगी .....
चमन के फूलों की तरह खिल–खिलाने के लिए है जिन्दगी
मुस्कराने के लिए है जिन्दगी .....

मुस्कराते रहो

चाहे जितने हो गम मुस्कुराते रहो
मौत हो अगर खड़ी गुन–गुनाते रहो
चाहे कांटों पे भी तुमको चलना पड़े
मुस्कराते हुए यूंही चलते रहो
चाहे जितने हो गम मुस्कराते रहो .....

रहो गर्दिश में अगर कभी भी कहीं
कुछ सुनते रहो कुछ सुनाते रहो
मौत हो अगर खड़ी सामने गुन–गुनाते रहो
दुश्मन कोई भी हो अगर यूंही सामने
खुद संभल कर चलो
खुद बचकर चलो सबको बचाते चलो
चाहे जितने हो गम मुस्कराते रहो .....

अगर आपस में आये फर्क धर्म व जाति का
प्यार से उसको तुम यूं मिटाते चलो
मौत हो अगर खड़ी सामने गुन–गुनाते रहो .....
देश अपना है देश अपना रहेगा
इसके लिए जान अपनी सब लुटाते चलो
चाहे जितने हो गम मुस्कराते रहो
मौत हो अगर खड़ी सामने गुन–गुनाते रहो .....

देश के सबसे बड़े भू–भाग में बोली जाने वाली हिंदी ही राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी है।

सुभाष चन्द्र बोस